

7. शतार्घ्यं CAT. Br. 7, 2, 4, 26. महार्घ्यं von grossem Werth KATHA. 21, 86. अनर्घ्य unschätzbar 24, 148, 172; vgl. u. अर्घ्य 1, a. — 2) Ehrengabe AK. 3, 4, 28, 2, 7, 32. H. 300. an. 2, 52. MED. gh. 2. अर्घ्य क्वास्मा अर्घ्य (RÖER: अर्घ्य) चकार CAT. Br. 14, 9, 4, 7 (= BRH. ĀR. Up. 6, 2, 4). तस्यार्घ्यमासनं चैव गो चावेद्य SĀV. 3, 6 (MBh. 3, 16696: अर्घ्यम्). दत्तार्घ्यम् JĀGŌ. 1, 234. ह्रस्वसर्पपुष्पाणां दत्तार्घ्यं पूर्णमञ्जलिम् 289. कुतञ्जकुसुमैः कल्पितार्घ्याय तस्मै MEGH. 4. कर्षवा-  
प्याम्बुशोकरैर्दत्तार्घ्ये Vid. 301. Verz. d. B. H. No. 849 (41). 884. 897. 903. 1246. 1253 (°दान). COLEBR. Misc. Ess. I, 135. 166. Vgl. अर्घ्य.  
अर्घट n. = पार्घट Asche Hār. 162. Wils.: अर्घट.  
अर्घाष्टपुरक (अर्घ - अष्टन् - पु) n. N. pr. einer Stadt LIA. II, 983.  
अर्घशि m. ein Bein. Çiva's ÇABDAR. im ÇKDr. — Nach Wils. aus अर्घ  
+ ईश entstanden; eher aus अर्घिन् = अर्घ्य.  
अर्घ्य (von अर्घ) 1) adj. a) schätzbar: अनर्घ्य unschätzbar KUMĀRAS. 1, 59; vgl. u. अनर्घ्य. — b) (अर्घ्य = अर्घ्यमर्कति) der Ehrengabe würdig gaṇa दाण्डादि (vgl. P. 5, 1, 66). H. an. 2, 345. MED. j. 4. JĀGŌ. 1, 357. 2, 232. KUMĀRAS. 6, 50. प्रतिसेवत्सरे वर्ध्याः (zu bewirthen) स्नातकाचार्यपा-  
र्यिवाः JĀGŌ. 1, 110. — 2) n. eine Ehrengabe an Wasser (bildet einen  
Theil des Madhuparka) P. 5, 4, 25 (अर्घ्य, vgl. 6, 1, 213). AK. 2, 7, 32. H. 300. an. 2, 345. MED. j. 4. ĀCV. GRH. 1, 24. 4, 7. KAUC. 90. R. 1, 2, 28. 9, 31. 67. 18, 14. 20, 9. 4, 34, 8. 5, 7, 50. RAGH. 1, 44. KUMĀRAS. 1, 59. 6, 50. m.: दत्तः स्वेदमुचा पयोधरेणाध्यां न कुम्भाभसा AMAR. 40. — 3) n. eine  
Art Honig VĀKASP. zu H. 1214. जर्त्कारुमुनितपोवनतद्भूतमधु। तस्य  
गुणाः। चतुरायुर्हितकारिवम्। धामवातकफपित्तनाशित्वं च। इति राजव-  
ल्लभः। ÇKDr.  
1. अर्घ्य, अर्चति 1) strahlen, vgl. अर्क, अर्किन्, अर्च, अर्चि, अर्चिस्, 8. अर्ज. —  
caus. strahlen machen: कर्षन्नुषसमर्चयः सूर्यं कर्षन्नेरेचयः RV. 3, 44, 2. Vgl.  
u. प्रति. — 2) lobsing, preisen NAIGH. 3, 14. अर्चामि सुमन्त्रकृत्युत्तुम्  
RV. 4, 138, 1. तदस्मै नव्यमर्जिस्वर्दत्तं प्रुष्मा यदस्य प्रत्येदीरति 2, 17,  
1. यस्मा अर्कं सप्तशरीषणमानुचुः (vgl. P. 6, 1, 36) VĀLAKH. 3, 4. RV. 4, 6, 8.  
10, 1. 19, 4. 92, 3. 10, 12, 4. 112, 9. 163, 1. u. s. w. AV. 12, 1, 38. 18, 3, 63.  
vom Singen der Winde: अर्चन्त्रं मरुतः सस्मिन्त्रिणा RV. 1, 32, 15. 83, 2.  
163, 1. 166, 7. 3, 14, 4. 5, 29, 6. vom Brüllen des Stiers: वृषा यत्सेकं वि-  
पिपिनो अर्चति 4, 16, 3. Im CAT. Br. in der Regel in Verbindung mit अमः  
अर्चतः आम्यतश्चेरुः 1, 2, 5, 7, 18. 8, 4, 7. 4, 2, 4, 15. 3, 4, 3. 10, 4, 3. 6, 6, 5,  
1 (= BRH. ĀR. Up. 1, 2, 1). 11, 1, 6, 7. u. s. w. — pass.: पाय्यां गायत्रमु-  
च्यते RV. 8, 38, 10. 7, 70, 6. part. praes. pass. 6, 38, 2. 49, 3. ऋच्, ऋचति loben  
DHĀTUP. 28, 19. Vgl. अर्क, अर्किन्, ऋच्. — 3) ehren, seine Achtung er-  
weisen; begrüßen DHĀTUP. 7, 24. mit dem acc.: एवं यः सर्वभूतानि ब्राह्म-  
णो नित्यमर्चति M. 3, 93. पितृन् 4, 150. यदर्चति 8, 305. MBh. 1, 6453. 2,  
1379. R. 6, 104, 38. ताम् — ब्राह्मणाः — मत्तैरर्चन् (sic) MBh. 3, 169. आ-  
र्चन् BHATT. 17, 5. आनर्च R. 2, 25, 24. RAGH. 2, 21. 4, 84. आनर्चुः INDR. 3, 1.  
MBh. 3, 988. आर्चति BHATT. 1, 15. अर्चिष्यन्देवतातिथीन् M. 4, 251. ge-  
rund. अर्चिता R. 3, 77, 15. und अर्च्य M. 1, 4. 7, 145. MBh. 3, 8018. अर्च्य  
तान्देवान्गतः ved. P. 7, 1, 38. Sch. med.: अर्चामहे ऽर्चितं सद्भिः MBh. 2,  
1383. pass.: आनर्चे तेन BHATT. 14, 63. — caus. अर्चयति (DHĀTUP. 34, 3) hat  
dies. Bedeutung: ते तमर्चयत्स्त्वं (so ist zu lesen) किं नो पिता यः u. s. w.  
PRAÇNOP. 6, 8. प्रियां वाचमभिवदन्त्यो ऽर्चयन्त्य एष वः पुण्यः सुकृतो ब्रह्म-  
लोकः MUṆD. Up. 1, 2, 8. M. 2, 181. 202. 3, 27. 144. 209. 4, 30. 5, 32. 6, 7.

MBh. 1, 6533. 2, 517. 1408. 3, 2762. N. 2, 14. 18, 17. R. 2, 32, 18. 4, 28, 6.  
5, 55, 21. SUPR. 1, 13, 6. आर्चिचत् VOP. 18, 1. med.: स्वाध्यायेनार्चयेतर्षन्  
M. 3, 81. अर्चयिष्ये ऽकर्मर्च्यं ताम् MBh. 1, 3203. अर्चयस्वमै R. 4, 4, 8. अ-  
र्चया चक्रे 1, 9, 67. कश्चिदार्चय्यते शिवम् VOP. 23, 20. अर्चित gehrt, ver-  
ehrt, begrüßt, in gutem Ansehen stehend AK. 3, 2, 51. 47. H. 447. M. 3,  
146. INDR. 4, 3. 5. RAGH. 1, 6. 90. ÇĀK. 64, 11. अर्चिते ऽप्यर्णवि रत्नैः VID.  
227. RAGH. 12, 89. अर्चितं सर्वलोकानां सत्कन्धविरपद्रुमम् R. 4, 18, 23. ऋ-  
षिगणार्चितं MBh. 3, 169. HIT. II, 76. उपविश्य — आसने परमार्चिते R. 1, 2,  
29. अर्धन् ein guter Weg AK. 2, 1, 16. — सर्वं मुक्तमादत्ते ब्राह्मणो ऽनर्चितो  
वसन् M. 3, 100. नवेनानर्चिता क्वास्य पशुकृष्येन चाग्रयः 4, 28. 29. — mit  
Ehrebietung gereicht: यो ऽर्चितं प्रतिगृह्णाति ददात्यर्चितमेव च M. 4, 235.  
अनर्चित 213. JĀGŌ. 1, 167. — अर्चितवत् KATHA. 22, 122. — desid. अर्चि-  
चिषति P. 6, 1, 3. Sch. — Die Begriffe Licht und Sprache berühren sich  
auch sonst in der Sprache.

— अनु zujauchzen; mit dem acc.: अनु यदौ मरुतौ मन्दसानमार्चि-  
न्ऋम् RV. 5, 29, 2.

— अभि 1) preisen, besingen; singen: पश्यपत्नो अभि कार्मर्चन् RV.  
4, 1, 14. इमं उ वा जर्तिरौ अर्चयत्यर्कैः 6, 21, 10. 1, 51, 1. 101, 7. 6, 30,  
15. 8, 40, 4. 10, 148, 3. VS. 4, 25. AV. 7, 82, 1. 13, 1, 33. 2, 23. med.: अभि  
वै अर्चे पोष्यावतो नृन् RV. 5, 41, 8. 6, 22, 1. अभि देवेभ्यमर्चयेत् (1 pers.)  
गिरा 10, 64, 3. — 2) ehren, verehren, seine Achtung erweisen: यथार्हमे-  
तानभ्यर्च्य M. 8, 391. 3, 30. 5, 52. R. 3, 22, 6. BHAG. 18, 46. RAGH. 1, 35.  
VIKR. 43, 9. BHATT. 1, 24. अर्चयिष्यन् R. 2, 90, 23. अर्चयति MBh. 2, 1390.  
R. 3, 77, 13. 4, 44, 33. Vgl. अर्चयन् fg.

— समभि ehren, verehren, begrüßen: देवान्पितृन्समभ्यर्च्य JĀGŌ. 1, 179.  
2, 112. समभ्यर्च्य स्वागतेनागतोस्तु तान् 1, 226. MBh. 3, 5045. 8169.

— प्र 1) preisen, besingen; singen: प्र वामर्चत्युक्थिनो नीथाविदे  
जर्तिरारः RV. 3, 12, 5. 13, 1. 101, 1. प्रार्चयमानो पुवाकुः 4, 120, 3. 62, 1.  
4, 83, 2. 7, 43, 1. प्र व इन्द्राय बृहते मरुतौ ब्रह्मांचत 8, 78, 3. 10, 133, 1. —  
2) ehren: प्रानर्चय्या जगदर्चनीयम् BHATT. 2, 20. — caus. dass.: प्रार्चिचच्च  
स्वयंभुवम् BHATT. 13, 95.

— अभिप्र besingen: अभि प्र वैः सुरार्धसमिन्द्रमर्च VĀLAKH. 1, 1. RV. 8,  
58, 4.

— प्रति 1) entgegenstrahlen: अग्ने यत्ते ऽर्चितेन ते प्रत्यर्च AV. 2, 19, 3.  
— 2) caus. den Grusserwiedern, mit dem acc.: दाःस्यं प्रत्यर्च्यं तं जनम् R. 2,  
71, 31. सर्वानर्चयित्वा — प्रत्यर्चितश्च तैः सर्वैः MBh. 2, 517. 3, 941. — 3)

caus. einzeln begrüßen: स्त्रियश्च ताम् — प्रत्यर्चयामासुः MBh. 1, 7211.  
— सम् ehren, verehren: देवान्समानर्चुः R. 2, 3, 48. — caus. dass.: तम्  
— समार्चयत् MBh. 3, 10190 (1090 gedr.). BHATT. 4, 9.

2. अर्च, अर्चति abschnellen, abschieszen: वृत्तं यद्वाकः परिषत्स्वज्ञाना अ-  
नुस्फुरं शर्मर्चत्युभम् AV. 1, 2, 3. Man könnte hier einen Fehler in der  
Schreibung vermuthen; vgl. 1. अर्ज u. उद्.

3. अर्च mit सम् med. feststellen: वि यो ममे रजसी सुक्रतूपयाज्ञरेभि स्त-  
म्भेभिः समानर्च RV. 4, 160, 4. — Vgl. 2. अर्ज 2. und रच्.

अर्च (von 1. अर्च् adj. strahlend: अस्मा एतद्व्यर्चयेव मासा मिमित्त  
इन्द्रे न्ययामि सोमः RV. 6, 34, 4.

अर्चक (wie eben) adj. verehrend: गुरुदेवद्विजार्चकः M. 11, 224. VOP. 3,  
132. subst. Verehrer VOP. 5, 7.